BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA, DELHI – 110034

SUBJECT:- SANSKRIT CLASS 8

कक्षा - अष्टमी - VIII

पाठ - 1 नीतिश्लोकाः

इस पाठ में आपके लिए श्लोकों के अर्थ समझाए जा रहे हैं। श्लोक के बाद उसका अन्वय दिया गया है। अन्वय के आधार पर श्लोक का अर्थ समझिए। श्लोकों में शब्दों का क्रम अलग होता है। श्लोक के अर्थ को समझने के लिए अन्वय में श्लोक के शब्दों को क्रमपूर्वक लिखकर फिर उनका अर्थ किया जाता है। प्रस्तुत पाठ में चार श्लोक दिए गए हैं जिनके द्वारा आप शिक्षा ग्रहण करेंगे।

श्लोक 1. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः यं कृत्वा नावसीदति।

अन्वयः - मनुष्याणां शरीरस्थः आलस्यं हि महान् रिपुः (अवति)। उद्यमसमः बन्धुः न अस्ति। यं कृत्वा (मनुष्यः) न अवसीदति।

अर्थ - मनुष्यों के शरीर में स्थित आलस्य ही महान् शत्रु (होता है)। परिश्रम के समान मित्र नहीं है। जिस को करके (मनुष्य) दुखी नहीं होता।

श्लोक 2. पापान्निवारयति योजयते हिताय, गुह्यं निगूहति गुणान्प्रकटीकरोति
आपद्गतं न जहाति, ददाति काले, सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः

अन्वयः - पापात् निवारयति, हिताय योजयते, गुह्यं निगूहति, गुणान् प्रकटीकरोति, आपद्गतं न जहाति, काले ददाति। सन्तः इदं सन्मित्रलक्षणं प्रवदन्ति।

अर्थ - पाप करने से रोकता है, कल्याण में लगाता है, गुप्त बातों को छिपाता है, गुणों को प्रकट करता है, मुसीबत में साथ नहीं छोड़ता, समय पर देता है (अर्थात् जब किसी समय आपको किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो देता है) सन्तों ने अच्छे मित्र के यही लक्षण बताए हैं।

श्लोक-3. दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते, तस्य तृतीया गतिर्भवति।

अन्वय:- वित्तस्य दानं, भोग:, नाश: तिस्र: गतय: भवन्ति। य: न ददाति न (च) भुङ्क्ते, तस्य तृतीया गति: भवति।

अर्थ- धन की दान, भोग और नाश तीन गतियाँ होती हैं। जो न देता है (और) न भोगता है, उसकी तीसरी गति होती है। (अर्थात् उसका धन नष्ट हो जाता है। यह धन किसी भी प्रकार से नष्ट हो सकता है जैसे बीमारी में या चोरी इत्यादि द्वारा। अत: धन का संचय नहीं करना चाहिए।)

श्लोक-4 प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचै:,
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्या:।
विघ्नै: पुन: पुनरपि प्रतिहन्यमाना:,
प्रारभ्य चोत्तमजना: न परित्यजन्ति।

अन्वय:- नीचै: खलु विघ्नभयेन न प्रारभ्यते, मध्या: प्रारभ्य विघ्नविहता: विरमन्ति, उत्तमजना: च विघ्नै: पुन: पुन: प्रतिहन्यमाना: अपि प्रारभ्य न परित्यजन्ति।

अर्थ- नीच लोग निश्चय ही मुसीबतों के डर से (किसी भी काम को) शुरु नहीं करते, मध्यम लोग (काम को) प्रारंभ करके मुसीबतों से घबराकर बीच में ही छोड़ देते हैं और लोग मुसीबतों द्वारा बार-बार दुखी किए जाने पर भी प्रारंभ किए हुए (काम को) नहीं छोड़ते। (अर्थात् जो व्यक्ति श्रेष्ठ होते हैं वे किसी भी प्रकार के कष्ट से घबराते नहीं हैं और जीवन में जो भी निश्चय करते हैं उसे पूरा करते हैं।)

—x— —x—

Open with Google Docs

अभ्यास:

यदि आपके पास पुस्तक है तो अभ्यास पुस्तक में करें अन्यथा कॉपी में करें।

प्रश्न - 1. श्लोक को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः यं कृत्वा नावसीदति।

(क) एक शब्द में उत्तर दीजिए –

(i) मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः कः अस्ति? _____

(ii) आलस्यं केषां शरीरे वसति? _____

(ख) पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए –

(i) मनुष्याणां बन्धुः कः अस्ति? _____

(ग) भाषिक कार्य

(i) 'उद्यमः' पद का विपरीत पद बताइए –

(अ) आलस्यम् (ब) बन्धुः (स) रिपुः

(ii) 'शत्रुः' पद का पर्यायवाची पद क्या है?

(अ) बन्धुः (ब) उद्यमः (स) रिपुः

प्रश्न - दिए गए श्लोकों को पढ़कर मञ्जूषा की सहायता से अन्वय को पूरा कीजिए –

मञ्जूषा - अतिः, दानम्, मनुष्याणाम्, बन्धुः, रिपुः, नाशः, यः, अवसीदति

(क) आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः यं कृत्वा नावसीदति।

अन्वयः – (i) _____ शरीरस्थः आलस्यं हि महान्
(ii) _____ (अवति)। उद्यमसमः (iii) _____ न
अस्ति, यं कृत्वा न (iv) _____।

(ख) दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।

अन्वयः- वित्तस्य (i) ———— भोगः (ii) ———— तिस्रः गतयः ———— न ददाति न (iii) भुङ्क्ते तस्य तृतीया (iv) ———— भवति।

प्रश्न 3. दिए गए पदों को उनके पर्याय पदों के साथ मिलाइए

	पदानि	पर्यायपदानि
(क)	उद्यमः	गुप्तम्
(ख)	गुह्यम्	परिश्रमः
(ग)	जहाति	यच्छति
(घ)	ददाति	खादति
(ङ)	भुङ्क्ते	त्यजति

प्रश्न 4. दिए गए वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए -

(क) सच्चा मित्र पाप से रोकता है।

(ख) आलस मनुष्यों का सबसे बड़ा शत्रु है।

(ग) हम खाना खाएँगे।

(घ) उत्तम लोग कार्य को छोड़ते नहीं हैं।

(ङ) तुम्हारे पिता का नाम क्या नाम है?

—×——×—

****